डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½

राम-रहीम

रेगिस्तान की आग

कदम बदर्स

रेगिस्तान की आग

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½ राम-रहीम

• लेखक बिमल चटर्जी • चित्रांकन :- दिलीप कदम, विजय कदम, त्रिशूल कॉमिको आर्ट.

एक दिन राम-रहीम ने एक यात्रीवाहक विमान व्दारा राजधानी से ग्रीनलैंड की उड़ान पकड़ी। ग्रीनलैंड एक स्वतंत्र राज्य था, जिसे कुछ ही माह पहले अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई थी। ग्रीनलैंड में राम-रहीम का एक मित्र माईक रहता था। उसने उन्हें यहां होनेवाले एक समारोह में निमंत्रित था। परिणाम-स्वरूप वे वहां जा रहे थे।
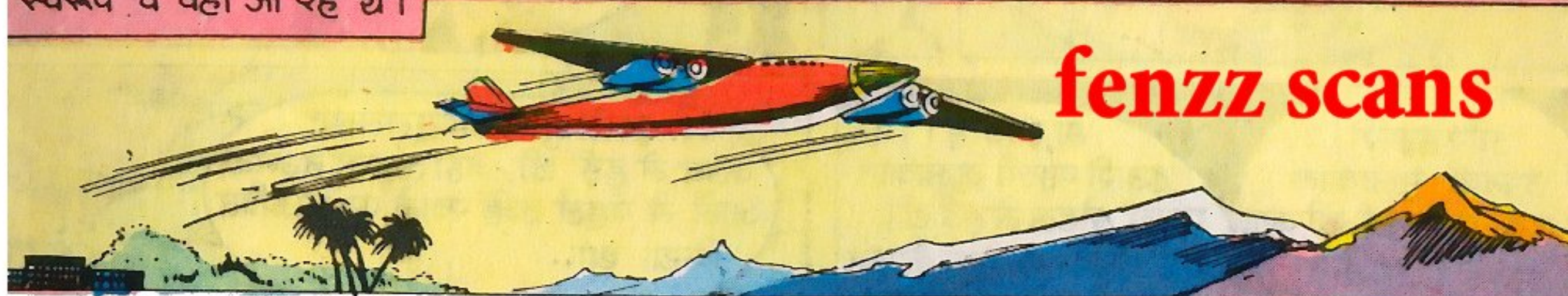
राम भइया, माईक से मिले हुए हमें कम से कम चार साल हो चुके होंगे। क्या उसे हमारा चेहरा याद होगा?
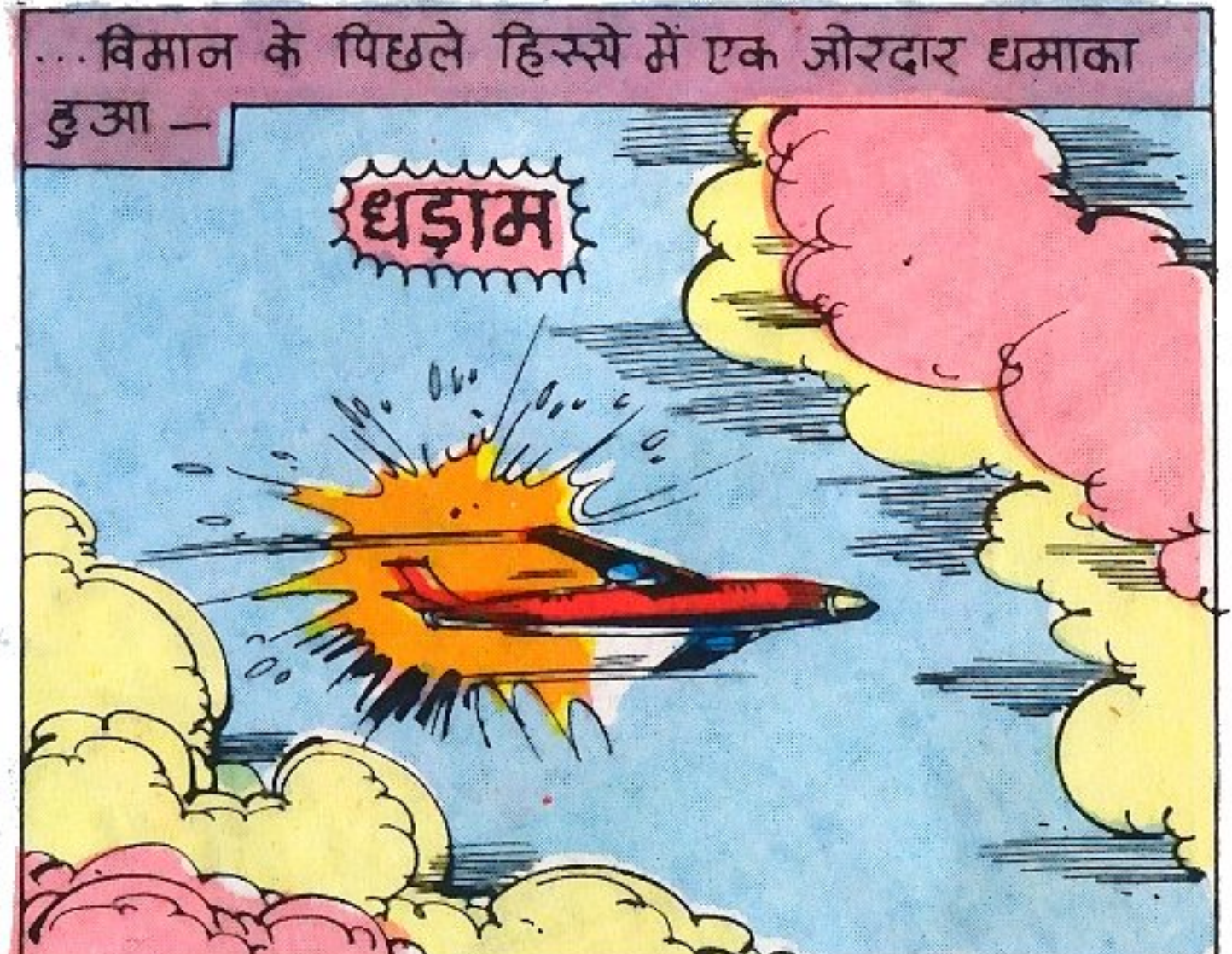
तुम भी क्या बेतुकी बात करते हो रहीम! अरे, जिसे हम यानी हमारा नाम और पता इतने वर्षों याद रहा, भला उसे हमारा चेहरा याद नहीं होगा.

...रही नाम और पते की बात, तो वह हमारा नाम और पता लिख कर ले ही गया था।

अच्छा, तुम एक बात बताओ कि उससे हमारी मुलाकात क्यों और कैसे हुई थी?
तुम्हारे डैडी, मेरा मतलब है अंकल के द्वारा। क्योंकि माईक के पिता भी मिलिट्री में थे। और वे अंकल के गहरे मित्र थे।

और हमारी उनकी मुलाकात कहां-कहां हुई थी क्या तुम्हें याद है?
हां, याद है। हमारी पहली मुलाकात शटल होटल में हुई थी। जहां माईक के पिता कैप्टन जोजफ ने हमें रात्रि भोज पर निमंत्रित किया था।...

... दूसरी मुलाकात मूनलाइट क्लब में हुई थी, जहां अंकल ने उनकी जाने से पहले उन्हें खाने पर आमंत्रित किया था...

...और तीसरी व आखिरी मुलाकात हमारी उनसे एयरपोर्ट पर हुई थी, जब हम उन्हें विदा करने गए थे।
गुड! अब तो तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा।

क्या मतलब?
अरे भई, मतलब साफ है। जब तुम्हें इतने साल बाद भी यह तीनों मुलाकातें याद रहीं और उन मुलाकातों में क्या-क्या हुआ यह भी याद रहा तो क्या उसे हमारा चेहरा याद नहीं रहा होगा?

ओह! सच राम भइया, बातों में तुमसे कोई नहीं जीत सकता... ...तुम...।
रहीम कुछ कहने ही जा रहा था कि...

...तभी विमान को एक जोरदार झटका लगा।
ओह!
उफ!

राम भइया, यह झटका कैसा...?
रहीम एक बार फिर अपनी बात पूरी नहीं कर पाया...

...विमान के पिछले हिस्से में एक जोरदार धमाका हुआ—
धड़ाम

और इससे पहले कि कोई भी यात्री, पायलट अथवा एयरहोस्टेस उस धमाके का रहस्य और कारण जान पाते, विमान ने आग पकड़ ली।
बचाओ...
हाय!

सभी की जानें अधर में लटकी थीं। यात्री न तो विमान से बाहर ही जा सकते थे और काफी ऊंचाई पर होने के कारण न ही विमान तुरंत ही कहीं लैंड करने की स्थिति में था। आग लगातार बढ़ती ही जा रही थी।

...अब तो मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगा कि वह मेरी जान ले ले, परन्तु इस विमान पर सवार अभागे निर्दोष यात्रियों की जान बख्श दे।
???
एक सहायक पायलट ने, जिसका नाम शेखर था। अपनी पेशानी पर चुहचुहा आये पसीने की बुंदों को पोंछा, फिर लड़खड़ाती आवाज में बोला –
जरूर यह विस्फोट किसी बम का ही हुआ होगा।
इसमें कोई शक नहीं। और यह काम हमारे देश में सक्रिय आतंकवादियों का ही रहा होगा।
मेरे विचार से यह समय इन सब बातों का नहीं है। जल्दी से कोई ऐसी तरकीब सोचो, जिससे यात्रियों की जानें बच सकें...
...वरना मेरी आत्मा की मरने के बाद भी शांति नहीं मिल सकेगी। इन सब लोगों की जान जाने का पाप मेरे ही सिर लगेगा।
ऐसा न कहिए कैप्टन। इस एक्सीडेंट में आपका कोई दोष नहीं है। यह सब तो...।
तभी सहायक पायलट शेखर ने अपने साथी की बात काटी–
कैप्टन! इस समय हमारा विमान लाल सागर के ऊपर से गुजर रहा है। आप जल्दी से विमान को जितनी जल्दी हो सके, नीचा करिए।
तुम कहना क्या चाहते हो मिस्टर शेखर
???

लोगों की जान अब एक ही सूरत में बच सकती है यदि वे समुद्र में कूद जायें
यह तुम क्या बक रहे हो शेखर? भला इतने विशाल समुद्र में कूदकर भी कोई बच सकता है।

विमान में रहने से तो मौत शत-प्रतिशत निश्चित है, क्योंकि विमान किसी समय भी फटकर टुकड़े-टुकड़े हो सकता है, परन्तु यदि समुद्र में कूदा जाये तो एक प्रतिशत का सौवां हिस्सा तो जान बचने की उम्मीद की जा सकती है।

...आगे सब कुछ इश्वर के हाथों में है।
आप शायद ठीक कह रहे हैं मिस्टर शेखर! समय नहीं है। मैं विमान को गोता खिला रहा हूं..

...आप तुरंत होस्टेस को विमान का अगला और पिछला दरवाजा खोलने का आदेश दीजिए...।
ओ.के. कैप्टन!

और मिस्टर प्रवेश, आप इमरजेंसी डोर खोल दीजिए।
ओ.के. कैप्टन!

सहायक पायलटों को हिदायत देने के बाद कैप्टन एयरहोस्टेस प्रोमिला की ओर मुखातिब हुआ —
मिस प्रोमिला, आप तुरंत स्पीकर पर यात्रियों को धैर्य और साहस बंधाइए और कहिए कि विमान के गोता खाते ही वे मेरी आवाज पर समुद्र में कूद जायें...

...बस फिलहाल यही एक उपाय है, जिससे उनकी जानें बच सकती हैं।
ओ.के. कैप्टन!

कैप्टन के आदेशानुसार विमान के दोनों दरवाजों के साथ-साथ दोनों तरफ के इमर्जेंसी डोर भी खोल दिये गये।
ऐ भाई, अब हमारा क्या होगा?
???
हमें हवाई छतरी दो।

प्लीज, आप लोग शांत हो जाइए...

...इस समय विमान लाल सागर के ऊपर से गुजर रहा है। आप लोगों से निवेदन है कि आप लोगों को जैसे ही आदेश मिले, साहस करके समुद्र में कूद पड़ें

...आगे सबकुछ ईश्वर के हाथ है। वही आपकी रक्षा करेगा।
इनके कहने का मतलब है कि हम जानते-बूझते आसमान से मौत की खाई में छलांग लगा दें।

मित्र! इसकी इच्छा यह है कि हम तन्दूर में न भुनकर समुद्री जीवों का आहार बन जायें। या समुद्र का खारा पानी पी-पीकर दम तोड़ दें।

स्पिकर पर इस बार कैप्टन का स्वर उभरा।
विमान गोता खाने वाला है, आप लोग भगवान् का नाम लेकर समुद्र में छलांग लगा दें।
अरे भाइयो, देखते क्या हो। पहले जिन्दगी और मौत के इन ठेकेदारों को ही नीचे धकेलो, फिर हम अपनी जिन्दगी के बारे में सोचेंगे।

हां-हां, फेंको इन लोगों को।
मारो सालों को...।

तभी जलते विमान ने समुद्र की ओर गोता खाया।
ई... ई...
बचाओ!

राम भइया, इन लोगों का तो भय से दिमाग फिर गया है। यदि तुम्हारा दिमाग ठिकाने पर हो तो हम नीचे कूद पड़ें।

हां, आकाश में शरीर के परखचे उड़वाने या जलकर मरने से तो अच्छा है पानी में कूद जायें। वहां कम से कम जिन्दगी बचने के कुछ तो चांसेज हैं।

अगले ही पल राम और रहीम ने पूरे आत्म-विश्वास और साहस के साथ विमान से बाहर छलांग लगा दी। समय की नजाकत को देखते हुए उनके साथ-साथ कुछ स्त्री और पुरुषों ने भी साहस दिखाया।
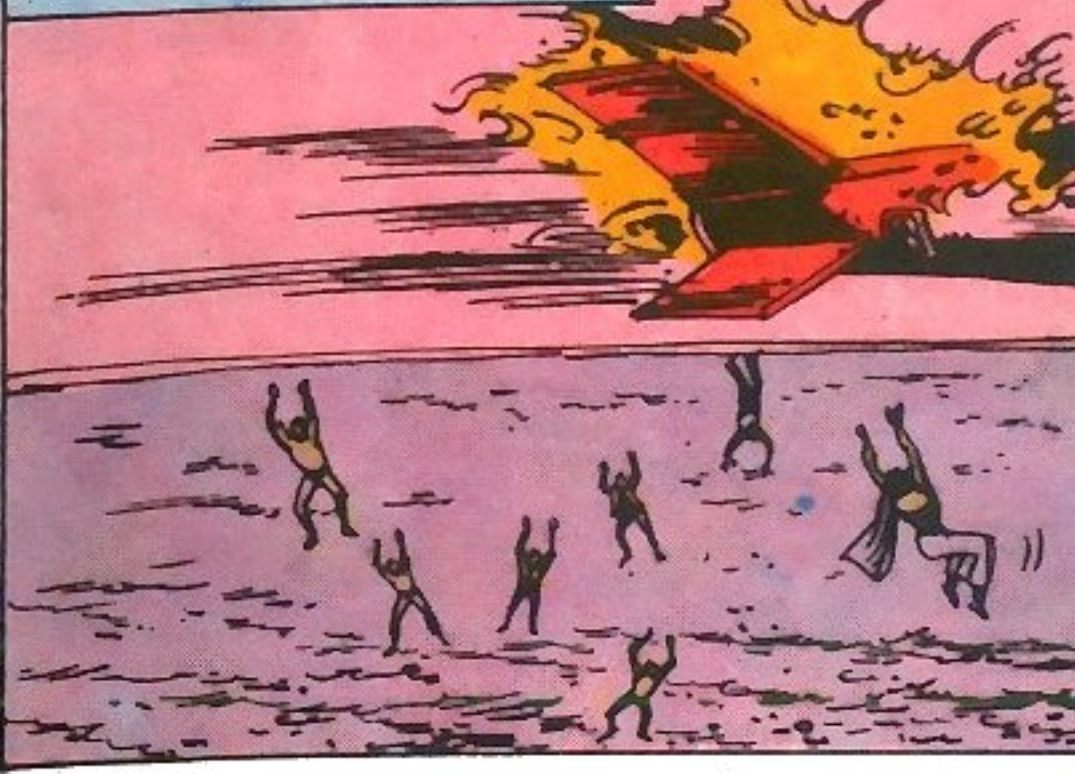
कम से कम बीस-बाईस स्त्री-पुरुषों ने राम-रहीम के आगे पिछे छलांग लगाई थी...

...और शीघ्र ही समुद्र में आ गिरे थे।
छपाक
छपाक
आह!
हाय!
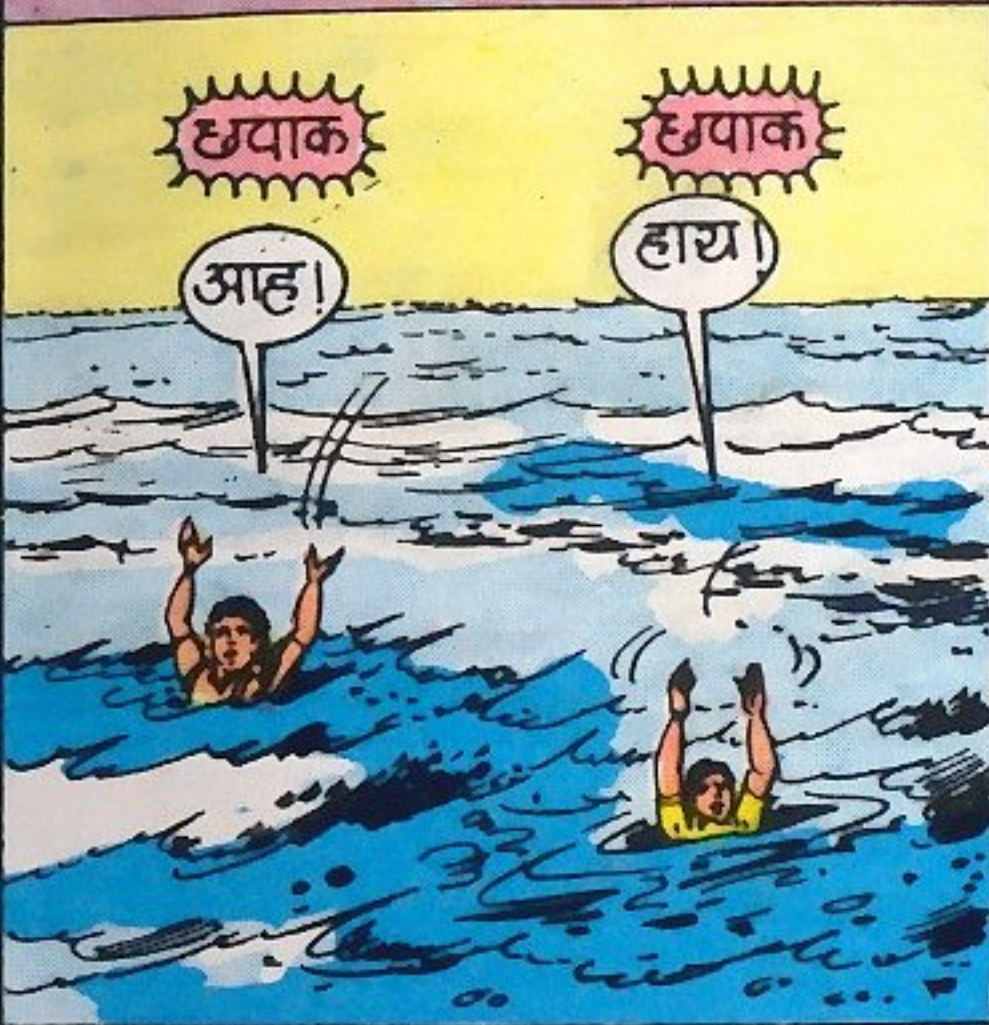
राम-रहीम आदि ने बिल्कुल सही वक्त पर विमान को छोड़ा था, क्योंकी गोता खाने के बाद न तो विमान ऊपर उठ पाया था, और न ही साबुत ही बचा था।
धड़ाम

पहले-पहले तो राम-रहीम पानी में गिरने के बाद काफी गहराई में उतरते चले गए, लेकिन उसके बाद हाथ-पांव मारकर उन्होंने तेजी से ऊपर की ओर तैरना आरम्भ कर दिया।

और कुछ देर बाद —
रहीम! तुम ठीक तो हो न?
अभी तक तो ठीक हूं राम भइया, आगे का अल्लाह मालिक है।
गड़प
गड़प

बचाओ! गड़प...गड़प
मुझे तैरना नहीं आता। बचाओ... गड़प...गड़प।
ओह!

रहीम। तुम उस स्त्री की मदद करो, मैं पुरुष को देखता हूं।
ठीक है।

दोनों
ओर तैरते हुए लपके।
फिलहाल तो हम उन्हें डूबने से बचा लेंगे, लेकिन कब तक?

या अल्लाह, तू ही उनकी मदद कर।

परंतु उनकी मेहनत और सोचना कुछ रंग नहीं लाया। मदद मांगने वाले स्त्री-पुरुष दोनों ही उनके निकट पहुंचने से पहले ही डूब गए।
राम भइया, वे तो डूब गए। अब हम क्या करें?
एक मिनट, मैं तुम्हारे ही पास आ रहा हूं।

दूर-दूर तक कोई नहीं दिखाई दे रहा है। हमारे साथ-साथ समुद्र में कूदने वाले शायद सभी डूब गए हैं।

अब हम कौन सी दिशा में तैरें राम भइया?

सूर्य उस तरफ डूब रहा है, इसका मतलब यह हुआ कि वह दिशा पश्चिम है...

...इस हिसाब से हमें उत्तर पश्चिम की तरफ तैरना चाहिए। मैंने सफर पर चलने से पहले नक्शा देखा था...

...उस हिसाब से हमें इस मार्ग पर कई छोटे-बड़े टापू मिलने चाहिए। यदि ईश्वर ने हमारी सुन ली तो हम शायद बच जायें।
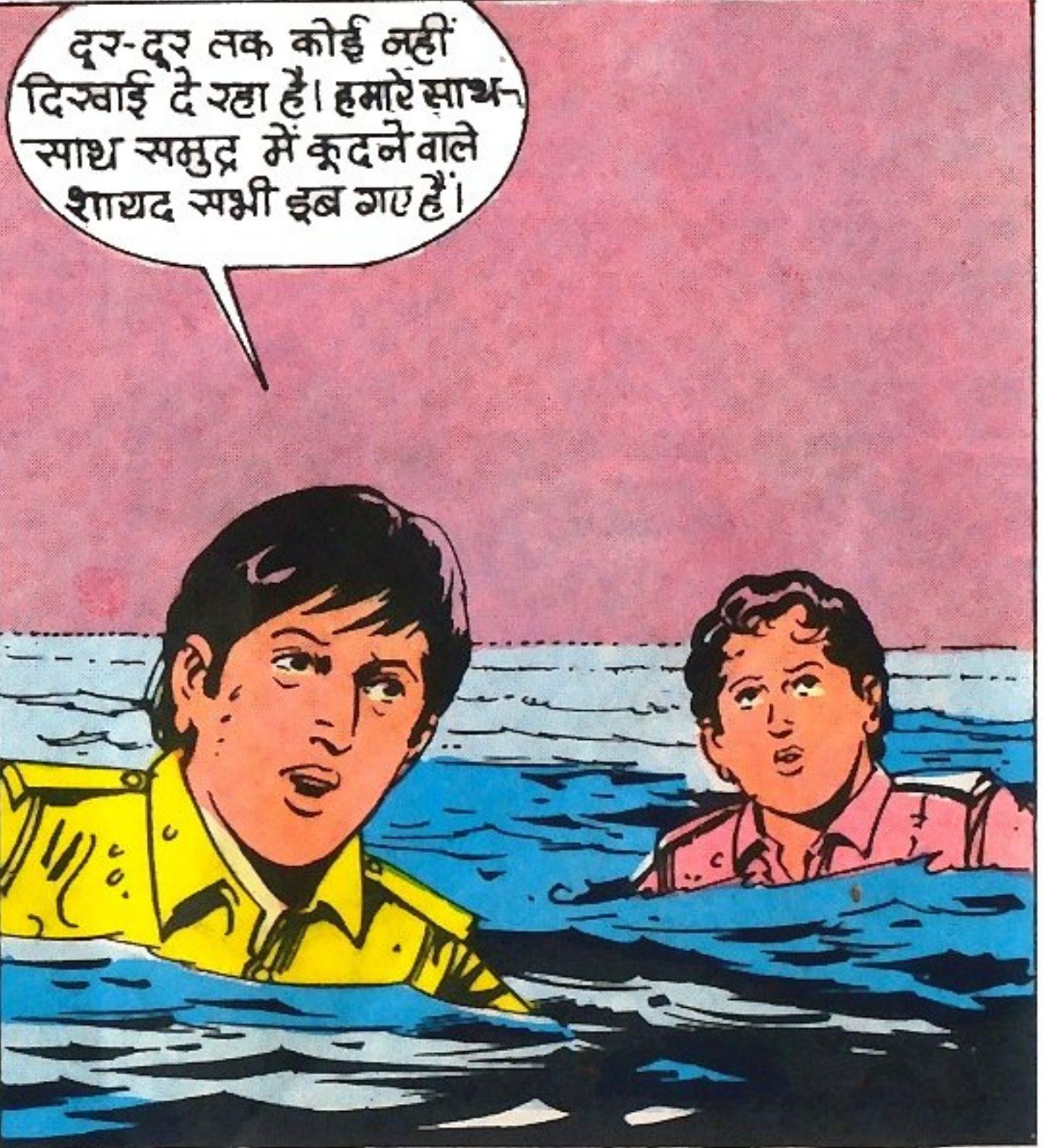
दोनों उत्तर पश्चिम की ओर एक कोण में तैरने लगे। कई घंटे लगातार तैरने के बाद उनके शरीर का एक-एक हिस्सा दर्द करने लगा था। साथ ही सांझ का अंधकार भी चारों तरफ फैलने लगा था।
ओह! राम भइया, मुझसे तो और नहीं तैरा जाता। लगता है हमारी किस्मत में पानी में डूबकर मरना ही लिखा है।

...नहीं राम भइया, अब हमारा जीवित बचना असंभव है। मेरा तो मौत की कल्पना कर अभी से सिर चकराने लगा है।

रहीम, होश में आओ मेरे भाई, हिम्मत से काम लो...

...तुम जैसे निडर इंसान भी यदि विपत्ति देख-कर धैर्य और हिम्मत का दामन छोड़ देंगे तो फिर साधारण मनुष्यों और तुममें क्या फर्क रह जाएगा...

...देखो भाई, यदि ईश्वर ने हमें मारना ही होता तो अब तक हम या तो विमान के साथ ही मर गए होते...

...या फिर अब तक किसी समुद्री जीव का आहार बन गए होते...
... जबकि अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। इसका मतलब यह हुआ कि हमारी किस्मत में अभी मौत नहीं लिखी है। ईश्वर की दया दृष्टि हम पर बनी है, इसीलिए हम जीवित हैं...

हां, थोड़ा-सा कष्ट हमारी किस्मत में जरूर लिखा है, जिसे हम भोग रहे हैं...

... हिम्मत से काम लो मेरे भाई, थोड़ा और आगे चलो। मुझे पूरा विश्वास है कि हमें ईश्वरीय मदद अवश्य मिलेगी।

राम के शब्दों ने रहीम के शरीर में जैसे एक नई जान फूंक दी। वह एक नये उत्साह और आशा के साथ राम के साथ तैरने लगा।

और लगभग पौना घंटा तैरने के बाद अचानक राम प्रसन्नता से चीख उठा —

राम ने तुरंत निकट पहुंचकर रहीम को सहारा दिया।

एक पल के लिए राम विचलित हुआ, परन्तु फिर उसका चेहरा पत्थर की तरह कठोर हो उठा। अगले पल वह बेहोश रहीम के साथ तैरते हुए तख्ते की ओर तैरने लगा।
यदि वह तख्ता मेरे हाथ से निकल गया, तो फिर हम दोनों की मौत निश्चित है।

तख्ते की ओर तैरते-तैरते राम का दम फूल गया...
हफ्फ! हुफ्फ!
छपाक
छपाक

परन्तु राम ने हिम्मत नहीं हारी और अंत में उसके दृढ़ निश्चय ने उसे रहीम समेत उस तख्ते तक पहुंचा दिया।
रहीम! देखो, हम तख्ते तक पहुंच गये हैं।
परन्तु रहीम तो बेहोश था। वह राम की कहां सुनता...

...राम ने बड़ी मुश्किल से उसे तख्ते पर चढ़ाया, फिर स्वयं भी करवट के साथ तख्ते पर पहुंच गया। तख्ता काफी बड़ा और मजबूत था, इसलिए दोनों के बोझ का उस पर जरा भी फर्क नहीं पड़ा।
आहा! हे ईश्वर, तेरा लाख-लाख धन्यवाद है।

उसके बाद राम को भी होश नहीं रहा कि वह कहां पड़ा है और किस अवस्था में है? अत्याधिक थकावट के कारण वह भी मूर्छित हो चुका था।
तख्ता पानी और हवा के बहाव में तेजी से एक ओर बहा चला जा रहा था, जबकि चारों तरफ रात का गहन अंधकार फैल चुका था।

फिर रात कैसे गुजरी और कब दिन निकला, इसका न तो राम को पता चला न रहीम को। पर हां, जब राम की आंखें खुली तो उसने कई गिद्धों को आकाश में मंडराते और कइयों को तख्ते पर पास ही बैठे देखा। शायद वे अपने शिकार के मरने का इंतजार कर रहे थे।
चीं...ई...ई...।
ओह!
की दया से हम अब भी सुरक्षित हैं।

उसने झट से रहीम की नब्ज टटोली, फिर रहीम को भी कुशल जानकर उसके चेहरे पर प्रसन्नता की एक नई लहर दौड़ गई।
आहा! मेरा भाई, मेरा दोस्त भी ठीक-ठाक है।

उसके बाद—
हिश...शी... हिश...।

अपने शिकारों को जीवित जानकर गिद्ध निराश होकर उड़ गये।
मैं सही मौके पर उठ गया, वरना ये कम्बख्त हमारी आंख-कान जरूर खा गये होते।

उसके बाद वह रहीम को उठाने की कोशिश करने लगा।
रहीम! रहीम, जागो मेरे भाई!
लेकिन रहीम अभी भी मूर्छित अवस्था में था, इसलिए उसने करवट तक नहीं बदली।

तब राम ने एक गहरी सांस लेकर चारों तरफ दृष्टि डाली।
पता नहीं इस समय हम किस दिशा में और कहां हैं....

...बस ईश्वर की इतनी कृपा है कि रात सकुशल गुजर गई और अभी तक कोई नई मुसीबत हम पर नहीं आई...

...परन्तु ऐसा कब तक चलेगा। यदि जल्द ही हमें कोई आसरा नहीं मिला तो हम भूखे-प्यासे मर जायेंगे।

आह!
ओह इसे होश आ रहा है। अब हम दोनों मिलकर किसी भी मुसीबत से जूझ सकेंगे।

रहीम! रहीम, क्या तुम ठीक हो?
आह! पानी...!

पानी? मैं इसके लिए पानी कहां से लाऊं?

रहीम, होश में आओ! इस समय हम समुद्र के बीच भटक रहे हैं।
हैं!

समुद्र का नाम सुनते ही रहीम उछलकर बैठ गया और अगले पल उसे सारी बातें याद आ गईं।
हम अभी तक जीवित हैं राम भइया?
हां, ईश्वर की कृपा से।

रहीम ने जल्दी से चारों तरफ एक दृष्टि डाली...

...फिर गले पर हाथ फेरता हुआ अत्यंत ही व्याकुल स्वर में बोला-
राम भइया, मुझे बड़े जोरों की प्यास लगी है। बोलने में भी कष्ट हो रहा है।

ओह! इस अथाह समुद्र के बीचो-बीच, जिसका दूर-दूर तक कहीं कोई किनारा नजर नहीं आ रहा है। मैं तुम्हारे लिए पानी कहां से लाऊं मेरे भाई।
अ... आह! बिना पानी के मैं मर जाऊंगा भइया।

ओह! विधाता की भी कैसी विडम्बना है, पानी के बीच होते हुए भी हम लोग प्यासे हैं...

और कुछ देर बाद भूख...?

राम भइया! पानी ना सही, कुछ खाने का ही इंतजाम करो। मुझे बड़े जोरों से भूख लगी है।
हे ईश्वर, अब मैं क्या करूं?

तभी राम के दिमाग में एक बात आई —
मैंने एक किताब में पढ़ा था, ठीक ऐसी ही स्थिति में, जिसमें हम हैं, उस किताब के हीरो-हीरोइन फंसे थे और उन्होंने भूख और प्यास मिटाने के लिए मछली के खून और मांस का इस्तेमाल किया था।

ठहरो रहीम, मैं अभी तुम्हारे और अपने लिए कुछ खाने और पीने का इंतजाम करता हूं।
कहकर...

...राम पानी की ओर झुक गया और पानी में बड़े गौर से देखने लगा।
???
आह!

फिर शीघ्र ही—
यह मारा।
छप

वह बड़ी-सी मछली तख्ते पर कुछ देर तक छटपटाती रही, फिर शांत हो गई।
लो रहीम, तुम्हारे खाने और पीने का इंतजाम हो गया।
य...यह मछली!

हां, इसका खून पीकर तुम्हारी प्यास बुझेगी और मांस खाकर भूख।
ल...लेकिन!

मजबूरी है मेरे भाई, अब इस बीच समुद्र में हमें तब तक ऐसे ही गुजारा करना पड़ेगा, जब तक कि हमें कोई सुरक्षित ठौर नहीं मिल जाता।

फिर राम ने अपनी पैंट की गुप्त जेब से एक छोटा-सा चाकू निकाला और मछली के ऊपर की खाल उतारकर...

...गरदन में एक छेद कर दिया।
लो, इसकी गरदन में मुंह लगाकर इसका ताजा-ताजा खून पी जाओ, इससे तुम्हारी प्यास काफी हद तक कम हो जाएगी।...फिर इसका मांस खाना।
ओह!

मजबूरी थी, रहीम ने मछली की छेद की हुई गरदन पर अपना मुंह लगा लिया और उसका खून चूसने लगा।

कुछ देर बाद –
सच राम भइया, मेरी प्यास काफी हद तक मिट गई है।
गुड! लाओ, अब मैं इसे काट देता हूं।

राम का मतलब भांपकर रहीम बौखलाकर जल्दी से बोल उठा –
नहीं-नहीं, रहने दो राम भइया। खून पीकर ही मेरी भूख और प्यास दोनों खत्म हो गई हैं।
यह तो अच्छी बात है। अब मैं अपने खाने पीने का इंतजाम करता हूं। तुम इसे पानी में फेंक दो।

राम के कहने पर रहीम ने अपनी मछली पानी में फेंक दी और राम ने शीघ्र ही एक और मछली पकड़ ली और उसे छीलकर गरदन का हिस्सा काटकर रहीम की तरह ही उसका खून पीने लगा।
खून पीने के बाद मांस खाने की उसकी भी इच्छा नहीं हुई और उसने मछली पानी में फेंक दी।

तख्ता पानी के बहाव में ही बहता रहा। दोपहर हुई तो जबरदस्त धूप से दोनों के शरीर चटकने लगे। राम ने अपने और रहीम के शरीर पर समुद्र का ही पानी डालकर गर्मी से थोड़ी राहत पाई।

राम भइया, आखिर इस तरह यह सफर कब तक जारी रहेगा? हम पर कभी भी और किसी समय भी प्राकृतिक विपत्ति टूट सकती है और यदि समुद्री तूफान आ गया तो?
अब जो होगा, उससे भी निपटेंगे। फिल-हाल तो हमारे हाथ में कुछ भी नहीं है...

...हमारी किस्मत अब इस तख्ते के हाथ में है। देखो, यह हमें कहां बहाकर ले जाता है और कब तक हमारा बोझ सहता है?

तभी पानी का एक तेज फव्वारा राम-रहीम के चेहरे पर पड़ा—
छपाक

दोनों ने अपने चेहरे से पानी पोंछते हुए उस तरफ देखा, जिधर से पानी की बौछार हुई थी। अगले ही पल उनके होश उड़ गए।
राम भइया! ह्वेल।
उफ! अब क्या होगा? यह तो सच मुच ही हम पर विपत्ति टूट पड़ी...

...ऐसी स्थिति में तो हम इससे अपना बचाव करने में भी असमर्थ हैं।

तभी ह्वेल ने अपना विकराल मुंह उन दोनों की ओर बढ़ाया और राम-रहीम भय से आंखें बंद करके अपने ईश्वर को याद करने लगे।
fenzz

अचानक पानी की एक जबरदस्त लहर ने उन्हें तख्ते समेत पन्द्रह - बीस फुट ऊपर उछाल दिया।
रहीम! तख्ते को मजबूती के साथ पकड़ लो।

जब तख्ता कुछ क्षणों बाद समुद्र की सतह पर आया, तो व्हेल का आस-पास कहीं नामो-निशान नहीं था।
आहा! अल्लाह ने फिर एक बार हमारी मदद की और हमें बचा लिया।

परन्तु, राम का ध्यान पूरी तरह पानी की ओर था, जिसका बहाव बहुत तेज था। वह तख्ते को भी उसी रफ्तार से बहाकर एक तरफ ले चला था।
हे भगवान्, आगे कहीं ढलान या पहाड़ तो नहीं है।
क्या हुआ राम भइया, तुम इतने गौर से पानी में क्या देख रहे हो?

रहीम, पानी के बहाव को देखो! इसका बहाव अचानक कितना तेज हो गया है, इसका मतलब है कि आगे पानी का मार्ग किसी ढलान से होकर आगे बढ़ रहा है।
ओह! यानी समुद्री पहाड़?
fenzz

या खुदा, अब क्या होगा?
आस-पास कोई भी ऐसी जगह या चीज नहीं है, जिसे पकड़कर या उस तक पहुंचकर हम सुरक्षित हो सकें, इसलिए तख्ते को ही मजबूती से पकड़ लो।

फिर दोनों ने मजबूती के साथ तख्ते को पकड़ लिया।

और जल्दी ही—
छ...छ...छई...ई...
उफ!

तख्ता काफी ऊंचाई से नीचे गिरा। राम-रहीम के शरीर का पोर-पोर दर्द कर उठा, लेकिन उन्होंने तख्ते को छोड़ा नहीं।
आह...ई...ई...ई!
नीचे बहाव और भी तेज था।

तख्ता पानी के बहाव के साथ बड़ी तेजी से उछलता हुआ आगे बढ़ने लगा।
राम भइया! अब तो अपने आपको संभाले रखना बड़ा मुश्किल हो रहा है!
साहस से काम लो रहीम, तख्त मत छो... ।
लेकिन राम अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था...

... कि तख्ता पानी में उभरी एक चट्टान के साथ टकराया—
खटाक
राम भइया!
रहीम!

छपाक
छपाक

उफ!
ओह! अब इस नई मुसीबत से कैसे निपटेंगे?

पानी का तेज बहाव तो दम लेने का या थोड़ा टिकने का भी मौका नहीं दे रहा है।

राम भइया, मैं अपने आपको संभाल नहीं पा रहा हूं। मुझे सहारा दो। मेरी मदद करो।
ओह!

हे ईश्वर, अब मैं क्या करूं, पानी का बहाव मेरे लाख कोशिश करने के बावजूद भी मुझे उस तक नहीं पहुंचने देगा।
राम भइया, जल्दी से मुझे...।
परन्तु राम, रहीम की बात पूरी तरह नहीं सुन पाया...

...क्योंकि ठीक उसी समय उसका सर पानी में उभरे एक नोकीले पत्थर से टकराया था।
खटाक
आह!

फिर राम को होश नहीं रहा और वह बेहोश अवस्था में ही पानी में डूबता, उतराता, बहता रहा।

रहीम भी बेहोश हो चुका था।

दोनों बेहोशी की हालत में कब तक बहते रहे, कहां कहां से गुजरे और किस-किस चीज से टकराये, इसका उन्हें कुछ पता नहीं चला...

...परन्तु जब राम को होश आया तो उसके शरीर का अंग अंग बुरी तरह से दुख रहा था और वह काफी घायल भी था।
ooo
आह! यह मैं कहां आ गया?

उफ! तेज रोशनी से आंखें चौंधिया रही हैं।
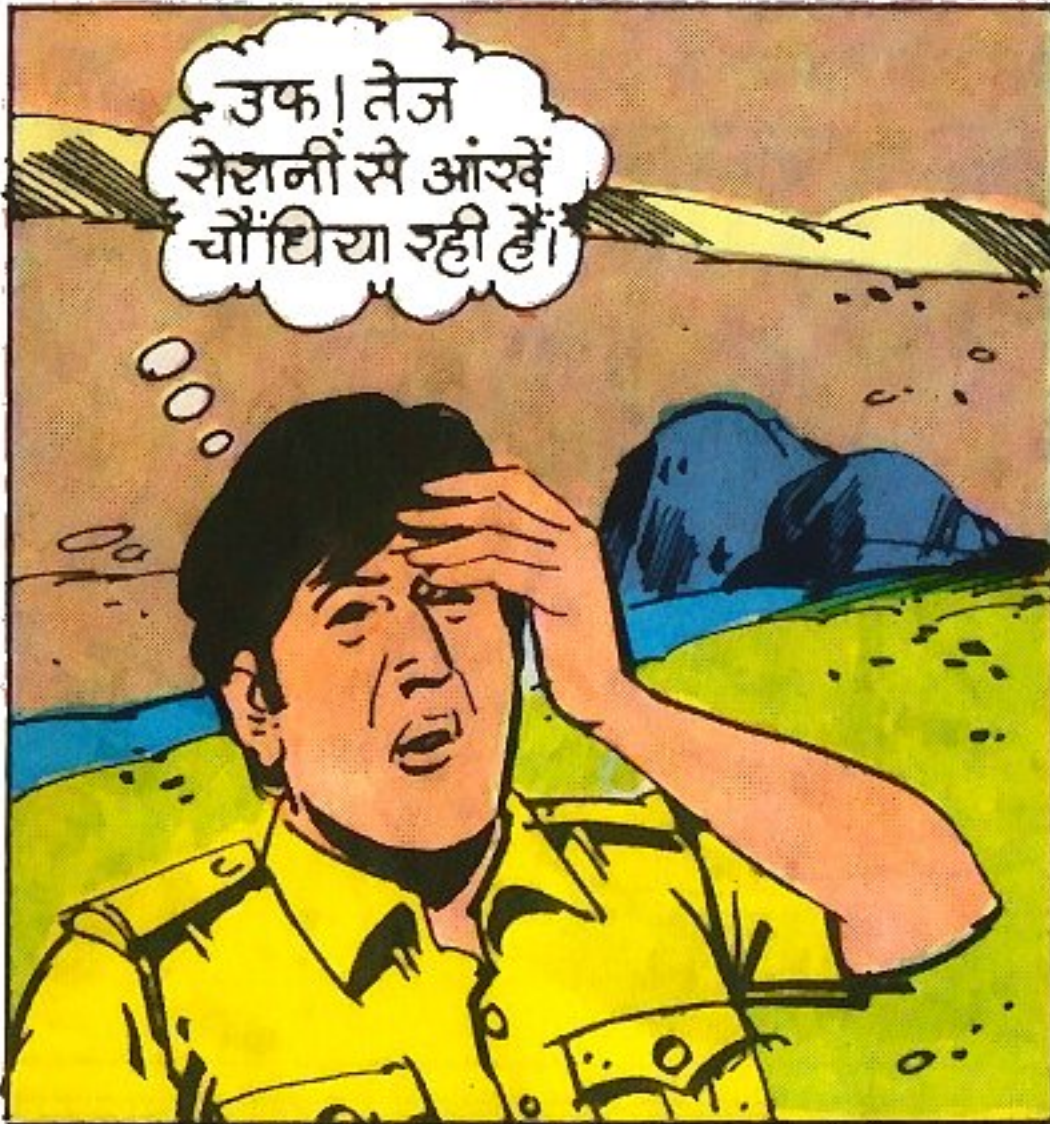
लगता है दोपहर का समय है...

...लेकिन जब हम झरने से नीचे गिरे थे, तो सांझ होने वाली थी...
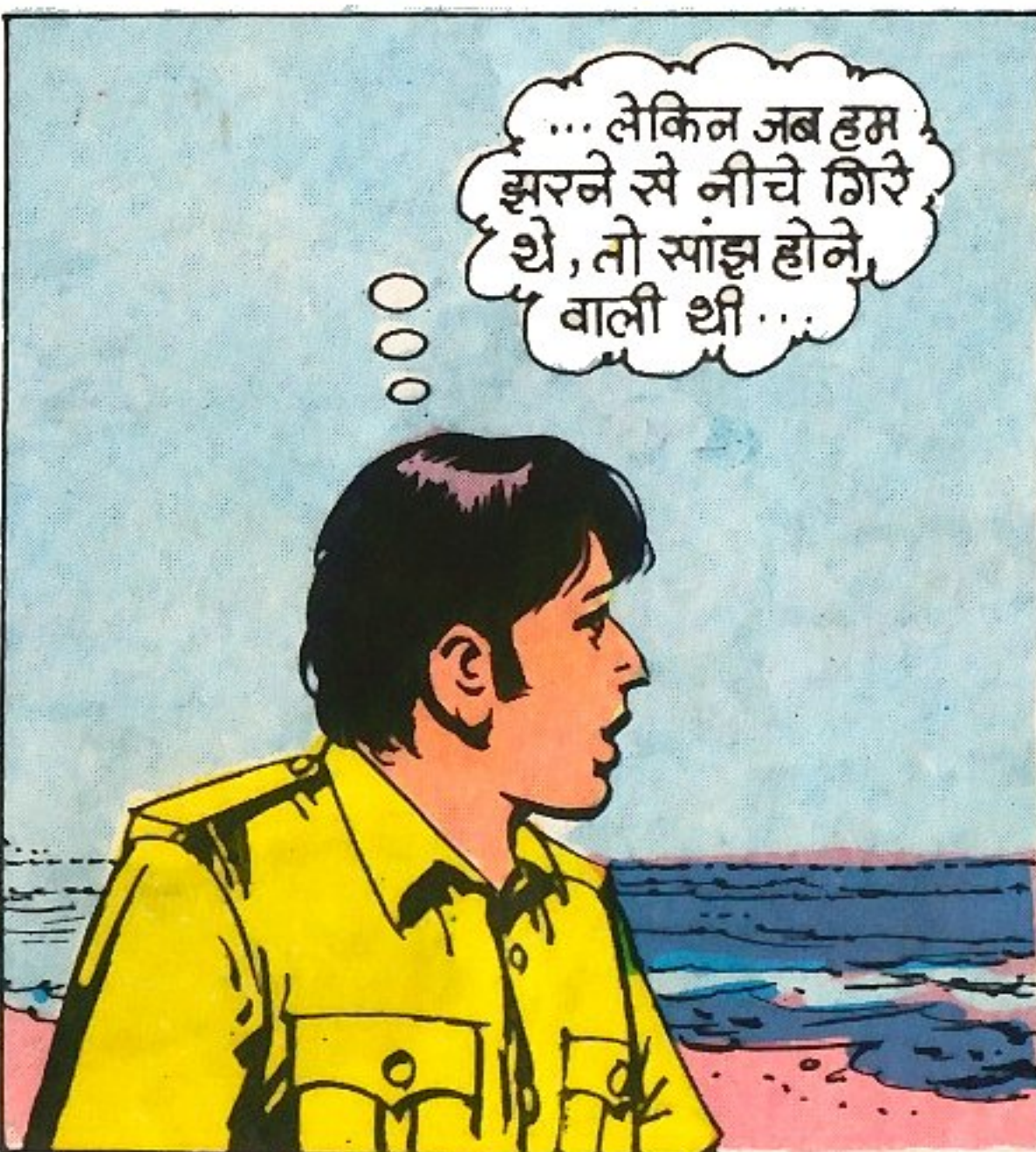
...ओह! तो क्या रात बीतने के साथ-साथ आधा दिन भी बीत गया है? और... और रहीम...!

और रहीम का ध्यान आते ही लाख घायल होने के बावजूद भी राम उछलकर खड़ा हो गया।
हे भगवान! मेरे भाई रहीम का क्या हुआ? कहीं...?

नहीं-नहीं, रहीम को कुछ नहीं हो सकता। यदि उसे कुछ हो गया तो मैं भी जीवित नहीं बचूंगा। यहीं किसी पत्थर से सिर टकरा-टकराकर अपनी जान दे दूंगा।

और अगले ही पल -
रहीम! मेरे भाई तुम कहां हो?
???

रहीम...!
कूं... कूं... ...कूं!

उधर रहीम को भी होश आ चुका था। लेकिन उसे होश में लाने की मदद की थी एक मादा चिंपांजी ने।
कूं...कूं...कूं!
हैं!

ओह! लगता है इस चिंपांजी ने ही मेरी जान बचाई है।
कूं...कूं...कूं...!

लेकिन मैं हूं कहां? और राम...?

राम का ध्यान आते ही रहीम उछलकर खड़ा हो गया।
राम भइया कहां हैं? उन पर क्या बीती होगी?

या खुदा! मेरे भाई की रक्षा करना। वरना उसके बिना मैं भी जीवित नहीं रह पाऊंगा।
कूं...कूं!

ऐ मेरे अजनबी दोस्त, क्या तुम बता सकते हो कि मेरा भाई राम, यानी मेरा साथी कहां है...

...क्या तुमने उसे देखा है? यदि देखा है तो जल्दी से मुझे उससे मिला दो। मैं तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूलूंगा।
कूं...कूं...कूं

चिंपाजी ने तुरंत रहीम का हाथ पकड़ लिया और उसे लेकर एक तरफ बढ़ चला।
कूं...कूं...कूं।
ओह! यह शायद राम के विषय में कुछ जानता है।

तभी–
रहीम भइया! तुम कहां हो?
अरे! यह तो राम भइया की ही आवाज है।

फिर शीघ्र ही –
राम भइया, मैं यहां हूं।

आहा! रहीम।
आहा! राम भइया।

अगले ही पल दोनों दौड़कर एक-दूसरे के गले से लग गए।
राम भइया!
मेरे भाई! भगवान् का लाख-लाख धन्यवाद, जो तुम मिल गए।
कूं...कूं...कूं!
राम-रहीम पानी में बहते हुए कहां पहुंच गए थे?
यदि वह कोई टापू था तो उन्हें वहां किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?
क्या राम-रहीम पुनः ग्रीनलैंड पहुंचने में सफल हो सके? यदि हां, तो कैसे?
क्या माईक ने राम-रहीम को पहचान लिया था?
विमान में आग कैसे लगी? क्या यह किसी के षड्यंत्र का परिणाम था?
इन सब प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक जानने के लिए इसी सैट में पढ़ें:–
राम-रहीम और वहशी कातिल